

3, 14734. 13, 1296. 3060. R. GORR. 2, 118, 18. BHĀG. P. 6, 19, 6. प्रीयते पितरस्तस्य प्राडुर्भावानुकीर्तनात् HARIV. 2376. मुदा परमया युक्ता प्रीयते तौ परस्परम् R. 4, 32, 11. प्रीयमाण KATHOP. 1, 16. N. 5, 35. MBH. 1, 60, 3, 15260. 5, 947. R. 4, 2, 42. 2, 36, 13 f. (प्रिय° gedr.). P. 4, 4, 33. BHĀG. P. 2, 9, 18. MĀRK. P. 51, 29. In derselben Bed. act.: प्रीयामो दर्शनेन वः MBH. 3, 15025. प्रीयति 12, 7177. प्रीयता partic. 13, 487. med. mit der transit. Bed. *lieben*, *Jmd geneigt sein*: कञ्चिच्चास्मान्प्रीयते 14, 231. या हि मां प्रीयते कश्चित् R. GORR. 2, 17, 32. समस्तो वत लोको ऽयं भजते कारणादनु । वं तु निष्कारणादेव प्रीयसे ॥ 6, 10, 23. कार्यार्थं प्रीयते जनः MBH. 12, 5066. 5065. प्रीयमाण BHĀG. 10, 1. वाचा सौम्यया प्रीयमाणया *freundlich* R. 3, 20, 2. — प्रांयासे (!) *du freust dich über* (acc.) MBH. 2, 2415. — 4) प्रीति° *vergnügt, fröhlich, befriedigt* AK. 3, 2, 52. MED. t. 33. RV. 3, 57, 2. 4, 2, 10. 5, 6, 3. 10, 66, 15. वाजिन 1, 66, 4. 69, 5. AV. 10, 9, 4. TBR. 1, 1, 40, 6. AIT. BR. 1, 4. M. 3, 131. 9, 195. INDR. 4, 15. SUND. 4, 23. N. 5, 40, 17, 26. R. 4, 1, 59. 4, 18. RAGH. 1, 81. 3, 63. MEGH. 4. KATHĀS. 27, 75. VID. 219. BRAHMA-P. in LA. 54, 20. BHĀG. P. 8, 7, 40. BHATT. 1, 24. MĀRK. P. 100, 43. तपसानेन यदि प्रीतः SUND. 1, 20. ARG. 1, 12. RAGH. 2, 63. 10, 44. यत्प्रीतो मे भवान् R. 6, 104, 31. KATHĀS. 11, 38. प्रीतो ऽस्मि ते दर्शनात् Spr. 580. कृतप्रतिकृत° RAGH. 12, 94. तौ परस्परतः प्रीतौ N. 5, 33. प्रीततर RAGH. 2, 67. अतिप्रीतौ परस्परम् KATHĀS. 2, 41. अनेन वाक्येन सुप्रीतः R. 2, 31, 28. N. 3, 16. परम्° R. 4, 1, 41. 52, 1. 64, 21. प्रीतमनस् 4, 65. 4, 15. प्रीतात्मन् M. 1, 60. 9, 129. R. 4, 9, 64. अप्रीत MĀRK. P. 72, 9. प्रीत *geliebt, lieb*: आत्मानं मन्यते प्रीतं भूपालस्य Spr. 3469. प्रीतेन वचसा (v. l. für प्रीतिवचसा) *mit freundlicher Rede* HIT. 19, 7. प्रीत n. *Scherz, Spass* MED. — Vgl. प्रयस्.

— caus. प्रीणयति P. 7, 3, 37, VĀRTT. 1. VOP. 18, 12. *vergnügen, ergötzen, erfreuen*, *Jmd gnädig stimmen* ĀCV. GRBJ. 4, 7. (आइदेवताः) प्रीणयति मनुष्याणां पितृन् JĀGŪ. 1, 268. MBH. 1, 6414. 5, 2665. 13, 3059. 3214. HARIV. 3793. R. 5, 76, 6. चतुः *thut dem Auge wohl* SUÇR. 2, 196, 6. ÇĀK. 193. Spr. 1926, v. l. 2106. RĀGA-TAR. 5, 280. GIT. 11, 1. BHĀG. P. 3, 7, 1. 24, 49. 7, 6, 19. 9, 3, 10. MĀRK. P. 16, 44. 26, 87. 99, 29. Verz. d. Oxf. H. 256, b, 3. 267, a, 18. PRAB. 112, 12. BHATT. 17, 51. med. MBH. 1, 5047. 13, 3275. 5948. 15, 101. प्रीणित 12, 9110. PAÑĒAT. 198, 21. BHATT. 22, 28. — प्राणयति SIDDH. K. zu P. 7, 3, 37. प्राययति VOP. 18, 12.

— desid. *Jmd gewinnen* —, *günstig stimmen wollen*: यस्त्वा कृषिषा पिप्रीषति RV. 4, 4, 7.

— अभि, अभिप्रीतो *nicht befriedigt* AIT. BR. 2, 12, 8, 24. — Vgl. अभिप्री.

— आ *befriedigen, begütigen, günstig stimmen, ergötzen*: स विद्वां आ चं पिप्रयो यतिं चिकित्वा आनुषक् RV. 2, 6, 8. TS. 3, 1, 2, 2. ÇAT. BR. 6, 2, 4, 28. *mit den sog. Āprl-Versen besprechen*: आप्रीभिराप्रीणाति AIT. BR. 2, 4. आप्रीते पशौ 11. ÇAT. BR. 13, 2, 2, 14. अनाप्रीत 6, 2, 1, 37. — med.: आत्मानमाप्रीणीत *ergötzte sich* TS. 5, 1, 2, 4. LĀṬI. 1, 7, 7. — Vgl. आप्री, आप्रीतया.

— परि, परिप्रीत *dem man Liebes erweist*, — *schmeichelt, theuer*: दुर्नियतुः परिप्रीतो न मित्रः RV. 1, 190, 6. कियंती घोषा मयंता वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्षेय 10, 27, 12. सस्वजाते परिप्रीतो प्रीयमाणौ *überaus erfreut* MBH. 9, 9156 (S. 248, Z. 1). — Vgl. परिप्री.

— अनुप्र. देवान् विप्रीतान् मनुष्याः पितरो ऽनु प्र प्रियते (im Comm.

gedr. पियते) TBR. 1, 3, 40, 4. 5; scheint eine Form von प्री mit प्र enthalten zu sollen und wird mit प्रीता भवति erklärt, ist aber jedenfalls fehlerhaft.

— सम्, संप्रीयते *befriedigt* —, *vergnügt* —, *froh sein, seine Freude haben an* MBH. 5, 3261. का कानेनाप्रतीतेन वासेन — संप्रीयते R. GORR. 2, 45, 22 (fälschlich संप्रियते 48, 18 SCHL.). नैतन्मनस्तव कथाम् — संप्रीयते BHĀG. P. 7, 9, 39. संप्रीयमाण MBH. 1, 7464. मित्रैः 5, 4185. 4165. संप्रोत *befriedigt, vergnügt, froh* 13, 3304. RĀGA-TAR. 2, 153. 4, 667. °मानस MBH. 1, 4440. — caus. *befriedigen, vergnügen machen*: पितृदेवानतिथिन् — सम्प्रवक्संप्रोणयन् MĀRK. P. 28, 19. संप्रोणित 96, 33. VP. 4, 13, 13 bei MUIA, ST. 1, 62. Spr. 1903, v. l.

2. प्री (= 1. प्री) adj. s. अघ°, कथ°, घृत°, ब्रह्म°, विश्व°.

प्रीण (von 1. प्र) adj. = प्रण, पुराण *ehemalig, alt* P. 5, 4, 30, VĀRTT. 3. TAIK. 3, 1, 18.

प्रीणन (vom caus. von 1. प्री) 1) adj. *angenehme Empfindung erregend, wohlthuend, beruhigend* SUÇR. 1, 178, 16. 182, 2. 230, 11. 2, 141, 21. — 2) n. *das Ergötzen, Erfreuen, Befriedigen* AK. 3, 3, 4. H. 1502. MED. p. 91. DBĀTUP. 26, 86. 27, 24. इन्द्रिय° MBH. 5, 779. BHĀG. P. 5, 8, 5, 7, 51. *ein Mittel zum Ergötzen, Erfreuen, Befriedigen* 8, 16, 56. MBH. 13, 130.

प्रीणय् s. unter dem caus. von 1. प्री.

प्रीति (von 1. प्री) f. 1) *Freude, Ergötzung, angenehme Empfindung, Befriedigung, gnädige Stimmung*; = कृष्य, मुद्ग AK. 1, 1, 4, 2. H. 316. an. 2, 178. fg. MED. t. 34. HALĪJ. 1, 123. देवानाम् ÇĀṆKH. ÇR. 16, 3, 16. 10, 7, 12, 18. विषयैवाप्यस्ति प्रीतिः ĀCV. GRBJ. 1, 1. ऋषेर्दृष्टार्थस्य प्रीतिर्भवत्याव्यानसंयुक्ता NIR. 10, 10. 28. 46. 11, 9. M. 9, 168. 12, 27. SĀṆKHJAK. 12. अनुलो प्रीतिमुपगम्य INDR. 3, 10. प्रीतिमेष्यति N. 16, 19. परा प्रीतिमवापतुः SUND. 4, 4. Hip. 2, 31. गुरवे प्रीतिमावहेत् M. 2, 246. 3, 82. प्रीतिमाकृर्तुम् N. 23, 11. SUÇR. 1, 48, 11. 12. °वर्धन 174, 2. HIT. 43, 6. क्षणिकी Spr. 2832. 2755. KĪVJĀD. 2, 236. कुर्वन्कामात्तणामुखपटप्रीतिमैरावतस्य MEGH. 63. चेतसः Spr. 886. सनसः 2478. मित्रं प्रीतिरसायनम् 2200. कूपो ऽतःस्वादुजलः प्रीत्यै लोकस्य 1129. आदरादर्शनः चतुःप्रीतिः *Augenweide* PRATĀPAR. 37, a, 4. नयन° SĀH. D. 79, 19. सत्ये प्रीतिः *Freude an der Wahrheit* Spr. 2279. PRAB. 43, 7. नहि नः प्रीतिः सवासि गते वयि N. 9, 16. देवने मम प्रीतिर्न भवत्यसुहृद्भ्यः 26, 14. काथ प्रीतिर्गृह्य शत्रुं निरुक्त्य MBH. 13, 29. भुवनलोकान° KUMĀRAS. 2, 45. प्रीत्या *in freudiger Erregung, froh, mit Freuden* N. 24, 42. INDR. 1, 38. SUND. 4, 8. R. 2, 31, 34. RAGH. 2, 51. KATHĀS. 6, 43. प्रीति bei den Buddhisten BURNOUF in Lot. de la b. l. 798. — 2) *freundschaftliche Gesinnung, Freundschaft, Liebe*; = प्रेमन् H. 1377. H. an. MED. HALĪJ. 4, 21. प्रीतिमाविष्करोति Spr. 650. 1103. दुर्जनेन समं सख्यं प्रीतिं चापि न कारयेत् 1187. भक्त्यभक्तयोः प्रीतिः 2009. 2392. 3592. VID. 306. KATHĀS. 4, 5. तुल्यः कृतप्रीतिः 22, 77. प्रीतिं सुरामुराशुकुर्मिथः कण्ठप्रकोतरम् 50, 123. 112. 113. मूलफलैः — प्रीतिं कुरुषु BHARTṚ. 3, 27 (nach der richtigen Lesart). चतुर्णामात्मज्ञानं हि प्रीतिः पारमिका मम *Liebe zu* R. 4, 22, 10. गुरोः प्रीतिं विदर्शयन् 2, 22. VARĀH. BRH. S. 85, 4. 94, 46. प्रीतिर्मे परमा वयि N. 13, 39. 26, 23. MBH. 1, 6578. ITIB. bei SĪJ. zu RV. 1, 144, 6. परस्परं प्रीतिरुपपत्ता Vrt. in LA. 24, 9. °प्रमुखवचन MEGH. 4. °स्निग्ध (लोचन) 16. खल° *die Freundschaft der Bösen* Spr. 194. 4065. RAGH. 12, 54.